सागर के संत निर्भयसागर

(आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज की जीवनी)

(प्रथम-पुष्प)

संकलन

मुनि शिवदत्तसागर

प्रकाशक

निर्भय वाणी प्रकाशन, तुलसी नगर, नागपुर

कृति	: **सागर के संत निर्भयसागर**
शुभाशीष	: वैज्ञानिक संत प. पू. आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी
संकलन	: मुनि श्री शिवदत्तसागर जी
संकलन सहयोगी	: स. सि. हुकुमचंद जी धबौली वाले सागर, (समाधिस्थ मुनि हर्षदत्त सागर जी) सुधा दीदी बंडा (सागर)
लेखन	: बा. ब्र. लबली दीदी बरहन (आगरा) कु. दिव्या जैन अवागढ़ कु. गुंजन फिरोजाबाद
कंपोजिंग	: सौरभ जैन, हनुमानगंज, फिरोजाबाद
प्रकाशक	: निर्भय वाणी प्रकाशन, तुलसी नगर, नागपुर
मूल्य	: सौ रुपये
संस्करण	: द्वितीय संस्करण 28 जनवरी 2022
प्राप्ति स्थान	: डा. मिथलेश कुमार जैन, निर्भयवाणी प्रकाशन, 1087/9 मारवाड़ी, रामसुमेर बाबा नगर, कावड़ा पेठ तुलसीनगर, नागपुर (महाराष्ट्र) 440002 मो. 9271278878
	: सुनील कुमार जैन जैन ब्रदर्स, 16/873, ईस्ट पार्क रोड, करोलबाग, नई दिल्ली मो. 9871078971
	: सिंघई पवन कुमार C/o पवन मेडीकल स्टोर, 37 अबंतिबाई मार्केट, मकरोनिया, सागर (म.प्र.) मो. 9425452366 07582-260444
	: अबनि बुक हाउस L-B-12, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेलवे स्टेशन के पास भोपाल मो. 9893903835

आद्यवक्तव्य

परम पूज्य वीतरागी संत आचार्य गुरुवर श्री निर्भय सागर जी महाराज ने मुझे संसार रुपी गर्त से निकालकर रत्नत्रय के कमलासन पर बैठाया है और मोक्षमार्ग में बढ़ने के लिए चरण और आचरण दिये हैं, इसलिए हम गुरुदेव के ऋणी हैं। इस ऋण को हम विनय-भक्ति और गुरु आज्ञा से ही कुछ अंशों में चुका सकते हैं, इसलिए विनय-भक्ति में गुरुदेव के जीवन वृत्तान्त को संकलित करने का प्रयास किया है।

जीवन वृत्त लिखने की दो विधाएँ हैं। एक स्वयं आत्म-कथा के रुप में लिखने की विधा और दूसरी विधा दूसरों के द्वारा संकलित करके लिखने की। दोनों विधाओं में अपनी जीवन गाथा स्वयं आत्म कथा के रुप में लिखना सर्वश्रेष्ठ विधा हैं, क्योंकि अपने जीवन के बारे में जो स्वयं जितना अधिक जानता है उतना दूसरा नहीं जान सकता है। दूसरों के द्वारा देखा सुना ही लिखा जा सकता है, परन्तु स्वयं के द्वारा अनुभूत एवं मनोगत भाव को भी लिखा जा सकता है। कई विद्वानों ने अपना जीवन वृत्तान्त लिखा है जैसे गणेश प्रसाद वर्णी जी ने ''मेरी जीवन गाथा'', श्वेताम्बर आचार्य तुलसी ने ''मेरा जीवन मेरा दर्शन'' और महात्मा गाँधी आदि ने भी अपनी जीवनी लिखी है। परम पूज्य आचार्य श्री से मैनें कहा- आप अपनी जीवनी के बारे में कुछ लिखें परन्तु उन्होंने कहा कि आप ही संकलित करें हम आपका सहयोग कर देंगें और दूसरों से भी करा देंगे।

फिर हुआ यही कि परम पूज्य आचार्य गुरुवर निर्भय सागर जी महाराज के जीवन वृत्तान्त को संकलित कराने में गुरुदेव के गृहस्थ जीवन के माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, मित्रों एवं सम्बंधीजनों का विशेष सहयोग मिला, इसके साथ ही पूज्य आचार्य श्री का सर्वाधिक सहयोग आशीर्वाद के रुप में मिला। गुरु के पास रहकर समय-समय पर संस्मरण के रुप में सदा संकलन करता रहा एवं मार्गदर्शन भी लेता रहा। इसके संकलन का कार्य सन् 2010 में हुए अवागढ़ के चातुर्मास के बाद से प्रारम्भ किया। इसके पहले मैं गुरुदेव को नहीं जानता था। इसलिए यह कार्य अत्यधिक कठिन था, परन्तु गुरुदेव के आशीर्वाद रुपी ऊर्जा से ही कठिन कार्य भी सरल हो गया।

इस संकलन के शब्द संयोजन अर्थात लेखन के कार्य में बा. ब्र. लबली दीदी बरहन जि. आगरा कु. दिव्या अवागढ़, कु. गुंजन, फिरोजाबाद एवं आचार्य श्री के गृहस्थ जीवन की बड़ी बहन सुधा, बण्डा, भाँजी डॉली जैन सागर एवं पिता श्री सवाई सिंघई हुकम चंदजी (समाधिस्थ मुनिश्री हर्षदत्त सागर जी) का अकल्पनीय सहयोग मिला। संकलन के उपरांत कई लोगों ने अलग-अलग इसके नाम सुझाये जैसे-अभय की निर्भय यात्रा, बुंदेलखण्ड के राजहंस, एवं बुंदेलखण्ड के निर्भय संत आदि परन्तु अंत में **''सागर के संत निर्भयसागर''** नाम देकर इस कृति को प्रकाशित किया गया।

इस संकलन से आचार्य श्री के व्यक्तित्व, कृतित्त्व एवं जीवन दर्शन को अच्छी तरह से जाना जा सकता है इसे तैयार करने में लगभग 5 वर्ष लगें। सन् 2010 से इसके संकलन एवं लेखन का कार्य प्रारम्भ किया गया था, जो सन 2016 मे प्रकाशन के योग्य बन पाया। इसमें भी अभी आधा अधूरापन है और यह प्रथम पुष्प के रुप में जन्म से लेकर क्षुल्लक दीक्षा तक एवं क्षुल्लक दीक्षा से लेकर संयम के रजत जयंती वर्ष तक ही संकलित करके प्रकाशित किया गया। द्वितीय पुष्प का कार्य निरंतर जारी है जो आगे प्रकाशित किया जायेगा। इसका प्रकाशन निर्भयवाणी प्रकाशन नागपुर से एवं प्रिंटिंग का कार्य जैन ब्रदर्स दिल्ली से हुआ।

अंत में परम उपकारी गुरुदेव के चरणों में शत्-शत् नमोस्तु, समस्त सहयोगी भक्तों के लिए आशीर्वाद एवं गुरु की कृति, गुरु के ही कर कमलों में समर्पित करते हुए मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझ रहा हूँ कि इस कार्य को करने का आशीर्वाद मिला। मुझे विश्वास है कि इस महनीय कृति से आबाल-वृद्ध और प्रबुद्ध जन लाभान्वित होंगे।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री के जीवन परिचय की इस संकलित जीवंत कृति में यदि त्रुटियाँ रह गई हों तो सुधि पाठक एवं विद्वतजन मुझे अवगत करायें जिससे अगले संस्करण में सुधारा एवं पूर्ण किया जा सके। सभी सुधी पाठक जन इस कृति का अवलोकन करें, प्रेरक प्रसंगों से प्रेरणा लेकर संयम पथ पर आगे बढ़ें। अंत में गुरुदेव के चरण-कमलों में त्रिकाल नमोस्तु.....

मुनि शिवदत्त सागर महाराज

(शिष्य पूज्य वैज्ञानिक संत आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज)

मेरे गुरु

मेरे गुरु परम पूज्य वैज्ञानिक संत आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज के गहन चिन्तन, गम्भीर ज्ञान, आगमानुसार निर्दोष-निष्पृह चर्या और सहज-शांत-वात्सल्यपूर्ण व्यवहार ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। मेरे गुरु की वाणी में ओज है, लालित्य है, तर्क है, अध्यात्म के साथ वैज्ञानिकता का पुट और अद्‌भुत आकर्षण है। इसलिए मेरे गुरु के श्री मुँख से निकला प्रत्येक शब्द श्रोताओं पर चमत्कारिक असर डालता है और ज्ञान को आचरण में ढालने को प्रेरित करता है।

मेरे गुरु ने वर्तमान में फैली राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं धार्मिक कुरीतियों पर अपनी वाणी और चर्या से कुठाराघात किया है और बालक-बालिकाओं को पाठशाला के माध्यम से नैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना डालने के साथ-साथ सुसंस्कारित करके भावी पीढ़ी पर असीम उपकार किया है। जेल, स्कूल, कॉलेज एवं सार्वजनिक स्थलों पर आपने उपदेश कर भारतीय संस्कृति, संस्कार और धर्म की रक्षा करने में मजबूत नींव का कार्य किया है।

चाहे रात्रि भोजन का त्याग हो अथवा व्यसन मुक्ति का कार्य हो, चाहे दूध-दही के भक्ष्य-अभक्ष्य का विवाद हो अथवा अभिषेक-पूजन का मतमतान्तर हो और चाहे बच्चों को सुसंस्कारित करने की बात हो उन सब समस्याओं का समाधान आपने साहित्य रचना एवं पाठशाला खुलवाकर कर दिया है।

मेरे गुरु ने परम् पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से क्षुल्लक ऐलक दीक्षा लेकर 20 वर्ष तक आपने जो ज्ञान और निर्दोष चर्या का पालन किया है एवं परम पूज्य आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी से 28 जनवरी 2007 को मुनि दीक्षा के साथ उपाध्याय पद पाया।

9 दिसम्बर 2007 को प.पू. आचार्य श्री विपुल सागर जी से आचार्य पद से विभूषित होकर 9 अप्रेल 2017 को महावीर जयंति पर आचार्य श्री के करकमलो से ही संस्कारित होकर आचार्य पद पर आसीन हुए।

आचार्य श्री जी के जन्म से लेकर संयम के 25 वर्ष तक के जीवन वृत्तांत को मुनि श्री शिवदत्त सागर जी महाराज ने अथक श्रम करके संकलित किया और उसके संशोधन करने का जब उन्होंने मुझसे कहा तो मैंने सहज ही स्वीकार कर लिया क्योंकि इतने बड़े दिगम्बर संत के जीवन वृत्तांत की कृति का संशोधन करना मैने बड़े सौभाग्य की बात समझी।

मेरे गुरु के जीवन की घटित घटनाओं से स्पष्ट होता है कि चिन्तन-मननशील भव्य जीवों के लिए छोटी-छोटी घटनाएँ भी वैराग्य एवं संयम के रास्ते पर आरूढ़ होने के लिए कारण बन जाती हैं और वे अपने जीवन को सार्थक कर लेते हैं।

अल्प समय में इस कृति के प्रकाशन का कार्य किया है। अत: त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। मैं सुधी एवं विद्वान पाठक गणों से अनुरोध करती हूँ कि इस कृति में जो भी त्रुटियाँ हों या आचार्य श्री के जीवन का कोई प्रेरक संस्मरण हो तो मुझे अवगत करायें जिससे अगले संस्करण में सुधारा एवं समावेशित किया जा सके।

''सागर के संत निर्भयसागर'' कृति द्वारा आचार्य गुरुवर का जीवन वृत्तांत पाठक गणों को नई चेतना एवं दिशा देगा, गृहस्थों को सदगृहस्थ एवं सदगृहस्थों को मुनि बनने की प्रेरणा देगा। यह कृति सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषा में लिखी गई है। प्रस्तुत कृति में गुरुवर के परिवार, जन्म, बाल्यकाल, तप, त्याग, संयम एवं आत्म साधना की अनेक शिक्षाप्रद घटनाएँ संस्मरण के रुप में दी गई हैं।

मनीषियों, चिंतकों एवं सुधी पाठकगणों से अपेक्षा करती हूँ कि इस कृति को पढ़कर यथा शक्ति संयम के पथ पर अग्रसर हों तो लेखक का प्रयास सार्थक होगा।

अंत में संत शिरोमणि परम् पूज्य गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं प. पू. आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री विपुल सागर जी महाराज के चरणों में नमोस्तु करके उन्हीं के परम शिष्य परम् पूज्य आचार्य गुरुवर श्री निर्भयसागर जी महाराज के चरणों में सविनय नमोस्तु एवं आचार्य श्री जी के परम शिष्य मुनि श्री शिवदत्तसागर जी आदि समस्त मुनि महाराज के चरणों में नमोस्तु करती हूँ।

बाल ब्रह्मचारणी लबली दीदी
बरहन जिला आगरा

यथानाम-तथागुण

कभी-कभी तीक्ष्ण गर्मी उपरांत अकस्मात् वर्षा होने पर शीतलता का अनुभव हो जाता है। इसी प्रकार मैं तीक्ष्णता का अनुभव कर रहा था कि अकस्मात् परम पूज्य वीतरागी वैज्ञानिक संत आचार्य रत्न 108 श्री निर्भयसागर जी महाराज के दर्शन हुए। दर्शन के उपरान्त मैंने ''आनंद कही अनकही एवं भक्ति की शक्ति'' ये दो कृतियाँ आचार्य श्री को भेंट की।

प्रथम दर्शन एवं परिचय से इतनी आत्मीयता एवं शुभाशीष मिला कि मैं दूसरे दिन पुनः संत के चरणों में पहुँचा। इतने समय के अंतराल में पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वाद के साथ ''सागर के संत निर्भयसागर'' की एक उत्तर प्रतिलिपि (फोटोकापी) प्रूफ रीडिंग हेतु सोंप दी।

मैंने यथाशीघ्र एवं यथा शक्ति त्रुटियाँ दूर कीं एवं मैंने भोपाल से सागर जाकर वह प्रति सौंप दी जब मैंने पांडुलिपी का पूर्ण अध्ययन किया तब ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री ने बाल्यावस्था से ही सुसंस्कार प्राप्त किये हैं, लौकिक अध्ययन भी सर्वांगीण किया है, फिर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर जैनागम का गहन अध्ययन किया एवं शिक्षण शिवरों, प्रवचनों एवं पाठशालाओं का शुभारंभ करके हजारों बालक-बालिकाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञानार्जन कराकर सदमार्ग पर लगाने का अद्वितीय कार्य किया है।

आपने सम्यक् तप, ज्ञान, चिंतन और साधना करके वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण अनेक कृतियों का साहित्यिक सृजन किया है। जिससे हजारों ज्ञान पिपासुओं की अज्ञानता व भ्रांतियों दूर हुईं और उन्हें सम्यक् ज्ञान का प्रकाश मिल रहा है।

आपकी सहज, सरल, तार्किक, ओजस्वी वाणी से लाखों जैनेतर प्रभावित हुए एवं उन्होंने जैन धर्म के गूढ़ रहस्यों को समझा। आपका नाम श्री निर्भयसागर वास्तव में निर्भयता को सार्थक करता है और बुंदेलखण्ड की हृदय स्थली सागर की भूमि में जन्मे आप अद्वितीय संत हैं। इसलिए **''सागर के संत निर्भयसागर''** इस नाम से आपकी जीवनगाथा प्रकाशित होकर कृति के नाम को सार्थक कर रही है। प्रस्तुत कृति मानव समाज के लिए पठनीय व अनुकरणीय है। अतः मैं पूज्य आचार्य श्री के चरण कमलों में शत्-शत् नमन करता हूँ।

-डा. अरविन्द जैन
A2/104 पेसेफिक ब्लू. होशंगाबाद रोड,
भोपाल (म.प्र.) मो. 9425006753

प्रकाशकीय

हमारे परम आराध्य गुरुवर आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज विलक्षण प्रतिभा के धनी, हर क्षेत्र के ज्ञानी, निजानुभवी, उच्चकोटी के साधक, आगम ज्ञाता, साहित्यकार, दार्शनिक, तार्किक, अन्वेषक, चिंतक, कवि, वैज्ञानिक और अध्यात्म जगत् के पुरोधा हैं। जैसे वर्तमान के आचार्यों में सर्वोत्कृष्ट आगम ज्ञाता, निर्दोष चर्या और ख्याति प्राप्त परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी एवं आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी आचार्य श्री विपुल सागर जी हैं, वैसे ही पूज्य आचार्य श्री निर्भयसागर जी इस 21वीं सदी में जिन शासन और भारत देश के अनमोल रत्न हैं। आचार्य श्री अपने गुरु के प्रति जितने विनम्र, विनीत, समर्पित और आस्था से ओतप्रोत हैं उतने ही अपने शिष्यों एवं भक्तों के प्रति वात्सल्य, करुणा, दया और कल्याण की भावना से भरे हैं।

जैन धर्म के सिद्धांतों को वैज्ञानिक शैली में उदाहरण, तर्क, युक्ति और आगम प्रमाण देकर सभी मानवों को सर्वोत्कृष्ट ऊँचाई तक ले जाना चाहते हैं इसलिए परम पूज्य आचार्य श्री के उपदेश में तर्क, आगम और विज्ञान का पुट होता है। बच्चों के उत्थान और उज्जवल भविष्य के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। इसलिए प्रेरणा देकर गुरुदेव जगह-जगह पाठशालाएँ खुलवाते हैं। पूज्य आचार्य श्री छोटे-बड़े और गरीब-अमीर के भेदभाव से परे रहते हैं अपने संयम साधना के प्रति सदा सजग हैं। ऐसे महान गुरु की इस जीवन्त कृति के प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है इसे हम अपना परम सौभाग्य मानते हैं। इसके संकलन का कार्य परम पूज्य मुनि श्री शिवदत्त सागर जी समाधिस्थ मुनिश्री हर्षदत्त सागर जी महाराज ने किया है उनके चरणों में नमोस्तु और प्रिंटिंग का कार्य जैन ब्रदर्स करोल बाग नई दिल्ली वालों ने किया है। उनके हम अभारी हैं।

प्रकाशक
डा. मिथलेश जैन
तुलसीनगर, नागपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. संख्या

(प्रथम खण्ड)

1. **नगर एवं परिवार परिचय** ---------- 1
2. **बाल्यकाल एवं शिक्षा** ---------- 6
   - प्राथमिक शिक्षा ---------- 6
   - उच्च शिक्षा ---------- 9
   - भाई की डाँट ---------- 10
   - बालाघाट में शिक्षा ---------- 12
   - दादी की भावनाएँ ---------- 12
   - बालाघाट में बुंदेलखण्डी ---------- 12
   - गोभी एवं सूजी का त्याग ---------- 13
   - वाहन चलाने एवं खेलने मे रूचि ---------- 13
   - पी. ई. टी. की तैयारी ---------- 15
   - यूनिवर्सिटी में एडमीशन ---------- 16
   - पढ़ाई करने का तरीका ---------- 18
3. **धर्म का बीजांकुर** ---------- 20
   - भोजनालय टिफिन के भोजन का त्याग ---------- 20
   - देव दर्शन का नियम, ---------- 21
   - मानस्तम्भ निर्माण की योजना ---------- 22
   - अभय कुमार और अभय सागर जी ---------- 23
   - भोजन से विरक्ति ---------- 24
4. **वैराग्य की ओर बढ़ते कदम** ---------- 26
   - वैराग्य के छह कारण ---------- 27
   - माता-पिता एवं पूर्व भव के संस्कार, राजशाही वैभव एवं जमीन का विवाद, मित्र द्वारा चोरी, मल का कीड़ा शवयात्रा, शारीरिक वेदना ---------- 27

(द्वितीय खण्ड)

5. **संयम पथ और क्षुल्लक दीक्षा** ---------- 32
   - अचानक संघ में प्रवेश ---------- 32
   - मित्रों द्वारा नियम भंग कराना ---------- 33
   - गुरुशरण की ओर प्रस्थान ---------- 33
   - केशलौंच और ब्रह्मचारी भेष ---------- 34
   - नैनागिरि की ओर बढ़ते कदम ---------- 36
   - क्षुल्लक दीक्षा की घोषणा ---------- 37
   - पिता श्री की तीन बातें ---------- 37
   - दीक्षा महोत्सव ---------- 38
   - दीक्षा के उपरान्त प्रथम विहार ---------- 39
   - गोना गाँव का आहार ---------- 40
   - ललितपुर में ग्रीष्मकालीन वाचना ---------- 41
7. **थोबोन जी चातुर्मास सन् 1987** ---------- **43**
   - दीक्षा के बाद प्रथम प्रवचन ---------- 43
   - पिच्छी निर्माण की प्रशंसा ---------- 43
   - ललितपुर में शीतकालीन वाचना ---------- 44
   - देवगढ़ में दिगम्बरत्व की साधना ---------- 45
   - चौका और होटल का भोजन ---------- 46
8. **जबलपुर चातुर्मास 1988** ---------- 48
9. **ऐलक दीक्षा और प्रभावना** ---------- 48
   - संघ से प्रथक् विहार ---------- 50
   - सागर में वेदी प्रतिष्ठा ---------- 52
   - सागर से कटनी विहार ---------- 53
   - कटनी में ग्रीष्मकालीन प्रवास ---------- 54
10. **कुण्डलपुर वर्षायोग सन् 1989** ---------- 55
    - विहार में संघ की भटकन ---------- 55

नरसिंहपुर एवं पथरिया पञ्च कल्याणक ---------- 56
कुण्डलपुर में ग्रीष्म कालीन वाचना ---------- 57
मुक्तागिरि की ओर विहार ---------- 58
11. मुक्तागिरि चातुर्मास सन् 1990 ---------- 59
मुक्तागिरि से विहार ---------- 61
नारी पर चिन्तन ---------- 61
गुरु का असीम वात्सल्य ---------- 62
सिवनी से पृथक् विहार ---------- 64
बालाघाट में महावीर जयन्ती एवं जेल में प्रवचन ------ 65
गोंदिया प्रवास एवं विहार ---------- 66
डोगरगढ़ एवं खैरागढ़ का प्रवास ---------- 67
डिण्डोरी में ग्रीष्म कालीन प्रवास ---------- 69
जंगल के आहार का चमत्कार ---------- 71
12. बुढ़ार चार्तुमास सन् 1991 ----------73
शहडोल में शीतकालीन वाचना ---------- 73
गुरु दर्शन की ओर बढ़ते कदम ---------- 74
13. कुण्डलपुर वर्षायोग सन् 1992 ----------76
गुरुवर की डाँट ---------- 77
14. रामटेक चातुर्मास (1993)---------- 78
रामटेक में बिच्छू हुआ बेहोश ---------- 78
छिपकली का प्रायश्चित ---------- 78
रामटेक से अमरकंटक की यात्रा ---------- 79
15. रामटेक चतुर्मास 1994---------- 81
छिंदवाड़ा में शीतकालीन प्रवास ---------- 81
ज़हर खाने से नहीं मरा आदमी ---------- 82
आचार्य श्री का धबौली आगमन ---------- 83
16. कुण्डलपुर चातुर्मास 1995 ---------- 84
साहित्य रचना ---------- 84
सांप का चमत्कार ---------- 84
गुरु की सच्ची सेवा ---------- 85
पैर का फ्रैक्चर ---------- 87
बावनगजा एवं तारंगाजी की यात्रा ---------- 87
17. महुआ जी (गुजरात) वर्षायोग 1996 ---------- 89
गिरनार यात्रा ---------- 90
मनचलों द्वारा लंगोट पर व्यंग्य ---------- 92
आचार्य निर्मलसागर जी की सेवा ---------- 94
मांगीतुंगी की यात्रा ---------- 94
18. सिद्धोदय नेमावर वर्षायोग सन् 1997 ---------- 96
पृथक् विहार एवं तारंगा पंच कल्याणक ---------- 96
19. अहमदाबाद वर्षायोग सन् 1998 ---------- 97
नौगामा पंचकल्याणक का प्रेरक प्रसंग ---------- 98
बागीदौरा में आम की विधि ---------- 99
20. घाटोल चातुर्मास सन् 1999 ---------- 100
बीमारी एक उपसर्ग की तरह ---------- 101
पुलिस अधीक्षक पर शराब की पुस्तक का प्रभाव ------ 101
बांसवाड़ा में ऐतिहासिक शिविर ---------- 102
21. बड़ोदिया चातुर्मास सन् 2000---------- 103
कुण्डलपुर की ओर विहार ---------- 104
पेड़ का चिन्तन ---------- 105
कुण्डलपुर: महामस्तकाभिषेक ---------- 106
22. तिलवारा घाट वर्षायोग सन् 2001 ---------- 107
पिच्छी परिवर्तन का संचालन ---------- 107
बण्डा नगर का पंचकल्याणक ---------- 108
विदिशा में प्रवास ---------- 110
मुनि श्री के साथ हरदा विहार ----------111

23. बैरसिया (भोपाल) वर्षायोग सन् 2002 --------- 113
धर्मयात्रा का शिलान्यास ---------- 113
विदिशा में सिद्धचक्र मण्डल विधान---------- 113
मधुमक्खियों द्वारा उपसर्ग---------- 114
सागर पंचकल्याणक ---------- 115
बण्डा में वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण ---------- 115
शाहपुर में ग्रीष्मकालीन वाचना---------- 116
24. पथरिया वर्षायोग सन् 2003 ---------- 117
मन्दिर का शिलान्यास ---------- 118
कुंडलपुर बड़े बाबा का मस्तकाभिषेक---------- 119
मुनि श्रीनिर्णय सागर जी से मिलन---------- 119
पटना बुजुर्ग पंचकल्याणक ---------- 119
25. जैसीनगर वर्षायोग सन् 2004 ----------121
जैसीनगर पंचकल्याणक ---------- 123
पजनारी का मेला ---------- 124
गुरु के साथ कुण्डलपुर में प्रवास---------- 125
कुण्डलपुर से विहार ---------- 126
पथरिया में वेदी शिलान्यास ---------- 127
संस्कृत महाविद्यालय मोराजी का शताब्दी समारोह ----- 128
सागर में ग्रीष्मकालीन वाचना एवं पंचकल्याणक महोत्सव 129
अतिशय क्षेत्र बड़ौह के दर्शन ---------- 131
26. विदिशा चातुर्मास सन् 2005---------- 132
सन्त निवास का शिलान्यास---------- 132
विमानोत्सव एवं शाकाहार सम्मेलन ---------- 133
पाठशाला शिक्षक-प्रशिक्षण संगोष्ठी ---------- 134
विदिशा से गंजबासोदा विहार---------- 134
27. दमोह वर्षायोग सन् 2006---------- 136
वृक्ष से प्रेरणा एवं प्रथक् विहार ---------- 137

(तृतीय खण्ड)

मुनि दीक्षा एवं उपाध्याय पद समारोह ---------- 139
डुंगरपुर पंचकल्याणक ---------- 144
'प्रतापगढ़ पंचकल्याणक ---------- 146
धरियावद की महावीर जयंती---------- 147
शेषपुर मोड़ पंचकल्याणक ---------- 148
ओड़वाढ़िया पंचकल्याणक ---------- 149
28. उदयपुर चातुर्मास सन् 2007 ---------- 150
शेषपुर के धनराज बने मुनिराज पुस्तक का लेखन ---- 151
स्वास्थ्य में गिरावट ---------- 152
महावीर मिण्डा की दीक्षा एवं समाधि ---------- 153
ब्रह्मचारी चम्पालाल की दीक्षा एवं समाधि -------- 154
29. सम्मेद शिखर जी की यात्रा---------- 155
पाठशालाओं का उद्घाटनः ---------- 155
आचार्य पद की घोषणा ---------- 156
विदेशी से भेंट---------- 161
आर्यिका श्री प्रभावनामती से मिलन---------- 162
शिखर जी की वंदना एवं क्षुल्लक दीक्षा---------- 163
30. भागलपुर वर्षायोग सन् 2008 ---------- 165
खंडित मूर्ति का चमत्कार ---------- 166
सिद्ध क्षेत्र गुणाँवा जी की यात्रा ---------- 168
पावापुरी की यात्रा---------- 168
राजगृही में पंचकल्याणक ---------- 168
आरा में महावीर जयंती एवं शिक्षण-शिविर --------- 173
मुनि निंदा से बालिका को व्यंतर बाधा---------- 173
बनारस में ग्रीष्मकालीन शिविर ---------- 175
31. बनारस वर्षायोग सन् 2009---------- 176
अयोध्या जैनतीर्थ के दर्शन ---------- 177

श्रावस्ती के दर्शन ---------- 177
लखनऊ में शीतकालीन वाचना ---------- 178
कम्पिलाजी एवं सौरीपुर बटेश्वर की वंदना --------- 179
आगरा में महावीर जयंती ---------- 179
जलेसर में पंचकल्याणक ---------- 180
32. अवागढ़ वर्षायोग सन् 2010 ---------- 181
अवागढ़ चातुर्मास में हुए चमत्कार ---------- 182
बन्दर द्वारा साँप से छेड़छाड़ ---------- 182
जसवंत नगर पंचकल्याणक ---------- 184
भिण्ड पंचकल्याणक ---------- 185
आगरा पंचकल्याणक एवं क्षुल्लक दीक्षा समारोह ----- 187
एतमादपुर में लघु पंचकल्याणक ---------- 188
टुण्डला में शिक्षण शिविर ---------- 189
मथुरा में होली पर प्रवास ---------- 189
फिरोजाबाद में महावीर जयन्ती ---------- 190
एटा में प्रवास ---------- 191
33. फिरोजाबाद वर्षायोग सन् 2011 ---------- 192
34. शिकोहाबाद रहचरी का पंचकल्याणक --------- 194
35. अहिक्षेत्र की ओर विहार ---------- 195
36. मुरादाबाद में धर्म प्रभावना ---------- 197
37. हस्तिनापुर तीर्थ के दर्शन ---------- 199
38. अलीगढ़ प्रवास ---------- 200
मथुरा का प्रथम महामस्तिकाभिषेक ---------- 201
दिल्ली प्रवास और प्रभावना ---------- 202
दिल्ली की महावीर जयंती ---------- 204
तिहाड जेल का प्रवचन ---------- 205
39. मेरठ वर्षायोग सन् 2012 ---------- 206
हस्तिनापुर में पंचकल्याणक महोत्सव ---------- 208
शिकोहपुर तीर्थ के दर्शन ---------- 209
अलवर का अल्प प्रवास ---------- 209
तिजारा तीर्थ पर नई प्रभात ---------- 210
महावीर जी के दर्शन और चमत्कार ---------- 211
ग्वालियर में प्रथम प्रवेश ---------- 211
मुरैना मंदिर के द्वार का शिलान्यास ---------- 212
आगरा की महावीर जयंती ---------- 213
एतमादपुर में उपसर्ग ---------- 213
40. मुरैना चतुर्मास सन् 2013 ---------- 215
ग्वालियर में दीक्षा महोत्सव ---------- 215
त्रिशला माता मंदिर का जीर्णोद्धार ---------- 216
सिद्धाचल पर्वत की मूर्तियों का जीर्णोद्धार ---------- 216
जेल की मूर्ति का जीर्णोद्धार ---------- 217
गुरु दर्शन के लिए बढ़ते कदम ---------- 218
गुरु शिष्य मिलन ---------- 218
41. आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी का संयमोत्सव वर्ष - 219
42. नौगामा चातुर्मास सन् 2014 ---------- 220
आचार्य श्री विद्यासागर जी का दर्शन लाभ --------- 221
43. सागर चातुर्मास सन् 2015 ---------- 221
गुरुदेव की जन्म स्थली में विधान ---------- 222
कुंडलपुर तीर्थ के दर्शन ---------- 222
नोहटा में मंदिर जी का शिलान्यास ---------- 222
भोपाल की महावीर जयंती ---------- 223
44. उज्जैन चातुर्मास सन् 2016 ---------- 224
तीर्थवंदना और संत मिलन ---------- 224
खंडवा पंचकल्याणक ---------- 225
मुक्तागिरी तीर्थ की वंदना ---------- 225
आचार्य पद दातागुरु के दर्शन ---------- 226
आचार्य पदारोहण महोत्सव ---------- 227